वेदों की खुशबू
ओ३म्
वेद सब के लिए
(धर्म मर्यादा फैलाकर लाभ दें संसार को)

VEDIC THOUGHTS

A Perfect Blend of Vedic Values And Modern Thinking

Monthly Magazine | Issue 35 | Year 3 | Volume 11 | August 2015 Chandigarh | Page 24 | मासिक पत्रिका Subscription Cost Annual - Rs. 100-see page 4

विचार

भक्ति में शक्ति

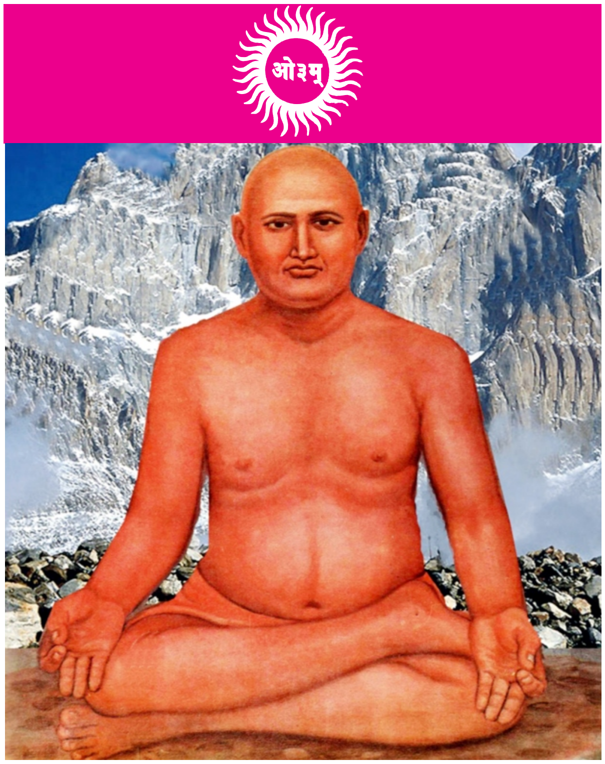

भक्ति को आप मनुष्य का ईश्वर के साथ अध्यात्मिक विवाह भी कह सकते हैं परन्तु इस विवाह के योग्य होने के लिये कुछ गुणो का होना अवश्य है। महऋर्षि दयानन्द के अनुसार जिन गुणो को व्यक्ति को अपने अन्दर लाना ज़रूरी है वे हैं——पहला, परमात्मा को सर्वांतर्यामी माने, अर्थात प्रभु सब जगह विराजमान है, हमारे अन्दर भी है। दूसरा, मन में किसी के प्रति भी द्वेश न हो केवल प्यार ही हो। तीसरा योग व स्वशासन द्वारा पांच शत्रुओं——काम, क्रोध, लोभ, मोह व अहंकार पर काबू पा लिया हो। चोथा, भगवान पर अटूट आस्था बन गई हो। पांचवां, परिश्रम में विश्वास करते हुये, अपने कार्य में लगा रहता हो, अर्थात न तो उसे सफलता उतेजित करे व न ही असफलता निरूउत्साहित करे। हर हाल में शातं व संतुष्ट रहे।

यह जानना आवश्यक हे कि ईश्वर का विषय आध्यात्मिक है, भौतिक नहीं जब कि इन्द्रियों का विषय भौतिक है आध्यात्मिक नहीं, अतः स्पष्ट है ईश्वर तक

इन्द्रियो से नहीं, आत्मा से ही पहुचां जा सकता है।

भक्त का आदर्श भगवान होते हैं। आदर्श का अर्थ है जिसको हम आदर्श माने उसके गुण, कर्म व स्वभाव को जाने व धारण करें। भगवान दयालु, कृपालु, रक्षक, पोषक, निर्भय, सच्चिदानन्द है, उसके गुण अनन्त है। इन सभी गुणों को जीवन में धारना ही सच्ची भक्ति है। जो केवल भाण्ड की तरह परमात्मा का

यह भक्ति द्वारा प्राप्त शक्ति थी जिस ने महाऋर्षि दयानन्द सरस्वती को पाखण्डो, अन्धविश्वासो, अन्याय, अत्याचार, व्यभिचार और अधर्म के विरूद्ध अकेले ही लडने का साहस दिया।

Contact / सम्पर्क करें :
Bhartendu Sood, Editor, Publisher & Printer # 231, Sec. 45-A, Chandigarh 160047
Tel. 0172-2662870 (M) 9217970381,
E-mail : bhartsood@yahoo.co.in

कीर्तन,पूजा व परमात्मा के नाम पर और कोई कमंकाण्ड जैसे हवन आदी करता चला जाता है, पर अपने जीवन को नहीं सुधारता, उसकी भक्ति व्यर्थ चली जाती है। कहने का अभिप्राय यह है कि भक्ति करने के लिये आहार,व्यवहार, विचार और आचार की शुद्धि बहुत आवश्यक है।

महाऋर्षि दयानन्द सरस्वती के अनुसार जैसे– जैसे ईश्वर के गुणो का हमें ज्ञान हो वैसे– वैसे उन गुणों को हम अपने जीवन में धारण कर लें, तभी हमारी प्रभु भक्ती सफल है, अगर हम अपने जीवन में धारण नही कर पातें है तो वह प्रभु भक्ती अधूरी है व असफल हैं।

उदाहरण के लिये ईश्वर दयालु, न्यायकारी, अभय, सब का कल्याण चाहने वाला, सत्य आन्नद देने वाला है, हम भी प्रभु भक्ती द्वारा इन गुणों को अपने जीवन में लाए, यही प्रभु भक्ती है।

अब प्रश्न यह आता हे कि भक्ती में शक्ति कैसे आती है? जब कोई भी व्यक्ति परमेश्वर की सच्ची भक्ती करता है तो उसमें अच्छा आहार,व्यवहार, विचार और आचार व धर्म के गुण स्वयं पैदा होने लगते हैं और वह अन्याय, अत्याचार, व्यभिचार और अधर्म से जुड़ी हर बात से उसे घृणा होने लग पड़ती है और वह इनका विरोधी बन जाता है। महाऋर्षि दयानन्द सरस्वती के कथनाअनुसार पापी चाहे कितना भी बलवान क्यों न हो वह उससे नहीं डरता।

यह सत्य है कि भक्त में निर्भयता, होंसला व साहस अद्वितय होता है। भक्त भगवान को ही अपना सब से बड़ा सहारा मानकर चलता है, ऐसे में भगवान स्वयं भक्त का मार्ग दर्शन करते हैं। मार्ग पर विघ्न भी आते हैं परन्ते प्रभु भक्ती से प्राप्त साहस द्वारा वह सभी विध्नों पर विजय प्राप्त करता चला जाता है।

भक्ती का अर्थ केवल अपना कल्याण नहीं, अपितु प्रभु से शक्ति पाकर जन हित करना है। अगर ईश्वर भक्ती में समाज सेवा की भावना नही ंतो वह साधना अधूरी है। इसका उदाहरण गुरू नानक, महार्षि दयानन्द व अन्य बहुत सारे सन्त महात्मा हैं। प्रभु से प्राप्त शक्ति व आत्मबल को दूसरों के कल्याण के लिये प्रयोग ही सच्ची भक्ती है।

भक्ती में विचित्र शक्ति है। भक्त का मनोबल इतना उन्नत होता है कि वह दूसरों की भलाई के लिये हंसता हुआ आग में कूद जाता है जैसे प्रहलाद ने किया, गुरू तेग बहादुर व गुरू अगंद देव की तरह हंसता हुआ अपना शीश कटवा लेता है व महार्षि दयानन्द की तरह जहर पी लेता है।

आर्यसमाज के बहुत ही व्यवहारिक प्रचारक महात्मा आन्नद स्वामी की पुस्तको में बार बार इस बात पर जोर दिया गया है कि सेवा के बिना भक्ति कौरी है और जो ईश्वर का सच्चा भक्त है वह जनमानस की सेवा के लिये वैसे ही स्वभााविक तौर पर बड़ेगा जैसे गाय घास की और बड़ती है। वह अपनी पुस्तक में लिखते हैं कि जब भी देश के किसी भाग में किसी भी प्रकार की आपता आती थी तो आर्यसमाज के लोग सब से पहले वहां पहुंचते थे। इसी संदर्भ में उन्होने एक घटना का वर्णन यूं किया है।––एक बार देश के एक भाग में पलेग फैली। हाल इतना बुरा था कि पूरे के पूरे गांव इस बिमारी की लपेट में आकर खत्म हो गये। बहुत जगह मरे हुओं को दफनाने वाला भी कोई नहीं था। ऐसे में आर्यसमाज का दल जब एक गांव में पहुंचा तो एक व्यक्ति जिसके परिवार के बाकी सब सदस्य खत्म हो चुके थे अपने आखरी सांस गिन रहा था। उस दल के एक सदस्य रोगों के प्रारम्भिक उपचार के बारे में काफी कुछ जानते थे, उसने देखा कि जो पलेग के कारण गिलटी बन गई थी अगर उस को काट दिया जाये तो वह व्यक्ति बच सकता था। उस के पास प्राथमिक उपचार का कुछ सामान था पर उस में चाकू या बलेड कहीं रह गया था। जब घर में भी ढूंढने पर चाकू नहीं मिला तो उस व्यक्ति ने अपने दांतो से ही गिलटी को काट दिया और उस व्यक्ति की जान को बचा लिया। ऐसी सेवा त्याग की शक्ति सिर्फ ईश्वर की भक्ति से ही आ सकती है और इसे ही भक्ति में शक्ति कहते है।

भक्त की पहचान बहुत सरल है, उसकी आकृति में आभा, प्रसन्न मुद्रा, तेज, करूणा, नम्रता जैसे गुण अवश्य होगें क्योंकि यह गुण भगवान के गुण हैं जो भक्ती से साधक में स्वभाविक रूप से आ जाते है। एक समय ऐसा आता है जब भक्त के प्राण, मन व आत्मा एक पंक्ति में आ जाते है। ऐसी स्थिती ंको समाधी कहा गया है तब हृदय पटल पर ज्ञान व आनन्द की बारिश सी होने लगती है।

अक्सर मानव जव कृत्रिमता, श्रृंगार, पाप, असत्य,भय, चटक–मटक आदि संसारिक वस्तुओं से उब जाता है, तो प्रभु के आंचल की शरण चाहता है। क्योंकि प्रभु की शरण में जाने से जो मन को श्शान्ति व आत्मा को आन्नद मिलता है उसका दुनिया का कोई भी सुख का स्रोत मुकाबला नहीं कर सकता। पर आवश्यक यह है कि ईश्वर भक्ति हमारी दैनिक दिनचर्या का अंग हो जिसे साधारण भाषा में संध्या,अरदास, नमाज पढ़ना कहा गया है।

सम्पादकिय

वेदान्त का निचोड़ ही तर्क है ना कि अंध विश्वास

मनुष्य है ही वही जो कि मनन करता है अर्थात सोचता है, क्योंकि पशुओं को ईश्वर ने सोचने की योग्यता नहीं दी, यह योग्यता सभी प्राणियों में केवल मनुष्य के पास ही है। और जब व्यक्ति मनन करता है, सोचता है तो अवश्यमेव तर्क पर भी पहुंच जाता है। और जो मनुष्य सोचता नहीं है वह पशु के

हमारी बस रोज श्रद्धालुओं को लेकर आती हे, इसलिये हमें 20रूप्ये प्रति व्यक्ति छूट मिलती है। इसलिये आप सभी 50 रूप्ये प्रति व्यक्ति के हिसाब से मुझे पैसे दे दें। मैं जाकर उनके दफतर में जमा करवा आउंगा। यह कहकर चालक ने सब से पैसे लेने शरू कर दिये।

दैनिक भास्कर
हिरासत में रामपाल पंचकूला सेक्टर-5 थाने में पुलिस अफसर रामपाल से बोला...

'इब लगा हवालात में समाधि, देखूं तो तेरा जादू'

रामपाल की हवालात में बैठे हुए की फोटो हुई वायरल

लाखों लोगों ने देखी, और कमेंट्स के साथ शेयर भी की

संजीव महाजन/रवीश कुमार | चंडीगढ़

जालसाज रामपाल वीरवार को पंचकूला सेक्टर-5 पुलिस स्टेशन की हवालात में जमीन पर बैठा था। पुलिस अफसर ने रामपाल से कहा, 'क्यूं रे, के दिमाग खराब था तेरा, जो इतना बवाल काट्या तनै। इब ठीक है या इब भी माथा खराब है तेरा'। रामपाल ने इस पुलिसवाले का कोई जवाब नहीं दिया। इसके बाद पुलिसवाले ने अपना मोबाइल निकाला और रामपाल की तस्वीर ली। कहा 'ले इब ये भेजूंगा तेरे आश्रम में, बड़ा जादूगर बणा सै'। बाबा ने फिर कोई जवाब नहीं दिया और इस पुलिसवाले ने अपने वॉट्सएप ग्रुप में यह फोटो डाल दी।

पुलिस अफसर फिर रामपाल से बोला, 'इब लगा हवालात में समाधि, देखूं तो तेरा जादू'। रामपाल पहले तो पुलिसवाले को चुपचाप देखता रहा, फिर एकदम बोला, मुझ पर भक्तों ने मायाजाल कर रखा था, उन्होंने ही मना किया था, जिस वजह से मैं पेश नहीं हुआ। इसके बाद रामपाल ने आंखें बंद कर लीं। पुलिस अफसर तपाक से बोला- 'इब माया छोड़ डंडे का जाल देख'। इतने में भनक लगी कि डीसीपी राहुल शर्मा हवालात के बाहर पहुंच गए और माहौल एकदम शांत हो गया। राहुल शर्मा को रामपाल की हवालात में जमीन पर बैठी तस्वीर वॉट्सएप पर वायरल होने का पता चला। सूत्रों की मानें तो उनके मोबाइल पर भी यह तस्वीर पहुंची। इसके बाद हवालात के बाहर वह खुद कुर्सी लगाकर बैठ गए और फिर किसी दूसरे पुलिसवाले को रामपाल से बात नहीं करने दी गई। सूत्रों की मानें तो हवालात में तस्वीर खींचकर फोटो वायरल करने वाले पुलिसवाले के खिलाफ डीसीपी कार्रवाई कर सकते हैं। इसकी गुपचुप तरीके से जांच भी की जा रही है।

हाईकोर्ट में पेश कर ही दिया

पहले बीमार था, अब बिल्कुल ठीक हूं : रामपाल

समान ही है, तभी तो अखड़ भाषा में जो व्यक्ति बिना साचे ही कुछ कर देता है , उसको कह देते हैं––तू गधा है।

सोचना और तर्क क्या है आपको इस छोटी सी घटना से मालुम हो जायेगा। एक बार मैं परिवार सहित दक्षिण के प्रसिद्ध धार्मिक स्थल रामेश्वरम घूमने गया। हम मदुराई से रामेश्वरम के लिये एक प्राइवेट बस में रवाना हो गये। उस मिनी बस में 30 के करीब व्यक्ति थे और सभी पढ़े लिखे थे और हमारी तरह ही दूसरे प्रांतो से दर्शन सैर करने आये थें। जब हमारी बस रामेश्वरम के नजदीक पहुंची तो चालक ने बस रोक दी और बोला––देखिये हम रामेश्वरम पहुँचने वाले है। जैसा कि आप जानते हैं रामेश्वरम एक अलग द्वीप है । अन्दर प्रवेश का 70 रूपये प्रति व्यक्ति शुल्क है पर क्योंकि

हम पीछे बैठे हुये थे। जब वह पैसे लेने में व्यस्त था तो एक दम मेरा दिमाग ठनका––रामेश्वरम तो तामिलनाडू में है न कि कोई अलग द्वीप जैसा कि यह चालक कह रहा है। दूसरा अगर कोई ऐसे टैक्स की गुराही हो तो सरकार सड़क पर सूचना पट लगाती है पर हमने तो ऐसा कोई बोर्ड आदि नहीं देखा, तीसरा अगर कोई टौल लगता भी है तो वह बस वाले की जिम्मेवारी है न कि सवारी की। मैने निश्चित कर लिया कि मैं बिना पूछ ताछ के पैसे नहीं दूंगा। जैसे ही वह मेरे पास आया मैने कहा––चालक महोदय मुझे आपकी 20 रूपये की छूट नहीं चाहीये। मैं अपने परिवार के सदस्यों का शुलक खुद आपके साथ जाकर खिड़की पर दूंगा। चालक यह सुनकर खफा हो गया। जब कुछ देर बहस हुइ तो बाकी सब यात्री भी

उस की तरफदारी करते हुये कहने लगे।——अरे भाई साहब इतनी दूर से हजारों रूपया खर्च कर आये हो और इस छोटी सी रकम के लिये बहस क्यों कर रहे हैं। दे कर खत्म करो, सब का समय बरबाद हो रहा है।देख नहीं रहे मन्दिर में दर्शन का समय खत्म हो रहा है। मैने कहा मैं कोई अतिरक्त समय तो लूंगा नहीं। इसी के साथ जाउंगा ओर पैसे देकर इसी के साथ बापिस आ जाउंगां। अब चालक को लगा कि उसकी नहीं चलेगी और मैं उसके साथ ही नीचे उतर गया। अभी 50 कदम ही चले थे तो हाथ जोड़ कर मुझ से बोला——अरे साहब यहां टौल कुछ नहीं है। मैं और कंडक्टर अपना खर्चा पानी इस बाहने इकठ़ठा कर लेते हैं। आप किसी को भी बताईये न। हम आप के परिवार को मन्दिर पहुंच कर सपैशल दर्शन करवायेंगे और अच्छा खाना भी किसी होटल में खिलायेंगें।

इस सारी घटना में अगर आप देंखेंगे तो बात केवल सोचने की थी। जब मैने सोचा और तर्क किया तो ठीक गलत का ज्ञान भी मुझे हो गया। पर यह सोचना और तर्क करना भी ऐक ऐसी कला है जिसके लिये अभ्यास करना पड़ता है, परिश्रम करना पड़ता है और धैर्य दिखाना पड़ता है। अक्सर भीड़ चाल से अलग व्यवहार करने के लिये दूसरों के क्रोद्ध को भी सहन करना पड़ता है।

आज हम ऐसे समय से गुजर रहें हैं जिस में बहुत कम लोग सोचते हैं और तर्क करतें हैं और यही कारण है कि हम ठगी ओर अन्धविश्वास की घटनाओं के शिकार होते जा रहे है। यही नही हमे बहुत सारे अन्धविश्वास हमारे परिवार के बड़े या जिन्हें हम धामिर्क गुरू कहते है, उनसे प्राप्त होते हैं, जिन्हें कि हम बिना किसी तर्क या सोच के जीवन में धारण करते जाते है और अपने जीवन को बोझिल बना लेते है। आप घर को ही ले लीजिये। अगर आप किसी विशय पर सोचते हैं कि ठीक है या गलत तो बाकी सदस्य ही आपसे नाराज हो जांयेगै क्योंकि सोच या तर्क की हमने जीवन में गुंजाइश रखी ही नहीं हैं। और जब धोखा खा जाते हैं तो पछताते है।

एक महान व्यक्ति विलियम करूमोंड ने कहा था—— जो तर्कसे नहीं सोचता वह मूर्ख है। जो तर्क को सुनना ही नहीं चाहता वह एक धोखा और फरेव है और जिस में तर्क का साहस नहीं वह गुलाम है।

William Drummond remarked: he who can not reason is a fool, he who will not is a bigot; he who dare not is a slave.

तर्कद्वारा किसी बात को न तोलने का सब से बड़ा नुकसान यह हुआ है कि आज लाखों करोड़ो व्यक्ति किसी एक व्यक्ति की कही बात को आंखे मून्द कर मान लेते हैं ओर उस की बदली हुई परिस्थीयों के अनुसार जांच पड़ताल ही नहीं करना चाहते। इससे न केवल उनका ही नुकसान होता है बल्कि सारे समाज का नुकसान होता है और कुछ स्वार्थीतत्व इस का फायदा उठाते रहते हैं। पर उनको दोष देना गतल है। दोष तो उनका है जो आंखे मूंद कर किसी भी बात को मान लेते है। मत और साम्प्रदाय भी किसी एक व्यक्तिकी बात को आंख मून्द कर मानने का नाम बन गया है। और अगर कोई विचारक किसी मत प्रारम्भ करने वाले की बात की सार्थकता को बदले समय के अनुसार देखने की कोशिश करता है उसे मत विरोद्धि माना जाता हैं। न तो प्रचारक और नही श्रद्धालु सैंकड़ो साल पहले कही बात को सत्य के आईने के सामने रखना चाहता है और न उन में साहस और क्षमता है। ऐसे में अध्यात्मिक जागृति या जिसे spiritual edification कहा गया है समभव नहीं है। और यही कारण है लोग अध्यात्मिक और नैतिक रूप में गरीब हो रहें हैं और समाज का पतन होता जा रहा है। 20 वी सदी में भारत में कोई ऐसा सन्त नहीं हुआ जिस में वह सत्य का तेज हो जो कि 19वी सदी या उस से पहले पैदा हुये सन्तो में था कारण आज हम सच्चाई का सामना करना ही नहीं चाहते, उस से भाग रहें है।

इस का एक ही उपाय है और वह है कि हम सच्चाई तक पहुंचने के लिये सोचना, मनन करना और तर्क करना अपनी आदत बनायें न कि केवल एक श्रोता बने रहें। अगला कदम है कि हम संशय का अध्यन और वार्तालाप द्वारा निवारण करें। और अन्त में उसे ही माने जो आपके विवेक को ठीक लगता है। जब आप ऐसा करते है तो निश्चित तौर पर आपके व्यक्तितव में एक खास फर्क आयेगा जो कि आपको अन्धविश्वासियों की वड़ी फौज से अलग कर देगा वही चिरस्थाई प्रसननता है और यही वेदान्त का निचौड़ है।

पत्रिका में दिये गये विचारो के लिए लेखक स्वयं जिम्मेवार है। लेखको के टेलीफोन न. दिए गए है न्यायिक मामलो के लिए चण्डीगढ़ के न्यायलय मानय है।

Publisher & Printer Bhartendu Sood **Printed at** Umang Printer, Plot No. 26/3, Ind. Area, Phase-II, Chd. 9815628590
Owner Bhartendu Sood **Place of Publication** # 231, Sector 45-A, Chandigarh 160047
Phone : 0172-2662870 (M) 9217970381 Name of Editor : Bhartendu Sood

How parenting plays an important role in character building-Part-II

Subroto Bagchi CEO MindTree

This speech was delivered to the Class of 2006 at the IIM, Bangalore on defining success by Subroto Bagchi CEO MindTree

Government houses seldom came with fences. Mother and I collected twigs and built a small fence. After lunch, my Mother would never sleep. She would take her kitchen utensils and with those she and I would dig the rocky, white ant infested surrounding. We planted flowering bushes. The white ants destroyed them. My mother brought ash from her chulha and mixed it in the earth and we planted the seedlings all over again. This time, they bloomed. At that time, my father's transfer order came. A few neighbours told my mother why she was taking so much pain to beautify a government house, why she was planting seeds that would only benefit the next occupant. My mother replied that it did not matter to her that she would not see the flowers in full bloom.

She said, "I have to create a bloom in a desert and whenever I am given a new place, I must leave it more beautiful than what I had inherited".

That was my first lesson in success. It is not about what you create for yourself, it is what you leave behind that defines success.

My mother began developing a cataract in her eyes when I was very small. At that time, the eldest among my brothers got a teaching job at the University in Bhubaneswar and had to prepare for the civil services examination. So, it was decided that my Mother would move to cook for him and, as her appendage, I had to move too. For the first time in my life I saw electricity in homes and water coming out of a tap. It was around 1965 and the country was going to war with Pakistan. My mother was having problems reading and in any

It was the parenting which made Bhagat Singh to happily sacrifice his life for the country.

case, being Bengali, she did not know the Oriya script. So, in addition to my daily chores, my job was to read her the local newspaper – end to end. That created in me a sense of connectedness with a larger world. I began taking interest in many

different things. While reading out news about the war, I felt that I was fighting the war myself. She and I discussed the daily news and built a bond with the larger universe. In it, we became part of a larger reality. Till date, I measure my success in terms of that sense of larger connectedness. Meanwhile, the war raged and India was fighting on both fronts. Lal Bahadur Shastri, the then Prime Minster, coined the term “Jai Jawan, Jai Kissan” and galvanized the nation in to patriotic fervour. Other than reading out the newspaper to my mother, I had no clue about how I could be part of the action. So, after reading her the newspaper, every day I would land up near the University's water tank, which served the community. I would spend hours under it, imagining that there could be spies who would come to poison the water and I had to watch for them. I would daydream about catching one and how the next day, I would be featured in the newspaper. Unfortunately for me, the spies at war ignored the sleepy town of Bhubaneswar and I never got a chance to catch one in action. Yet, that act unlocked my imagination.

Imagination is everything. If we can imagine a future, we can create it, if we can create that future, others will live in it. That is the essence of success.

Over the next few years, my mother's eyesight dimmed but in me she created a larger vision, a vision with which I continue to see the world and, I sense, through my eyes, she was seeing too. As the next few years unfolded, her vision deteriorated and she was operated for cataract. I remember, when she returned after her operation and she saw my face clearly for the first time, she was astonished. She said, “Oh my God, I did not know you were so fair”.. I remain mighty pleased with that adulation even till date. Within weeks of getting her sight back, she developed a corneal ulcer and, overnight, became blind in both eyes. That was 1969. She died in 2002. In all those 32 years of living with blindness, she never complained about her fate even once. Curious to know what she saw with blind eyes, I asked her once if she sees darkness. She replied, “No, I do not see darkness. I only see light even with my eyes closed”. Until she was eighty years of age, she did her morning yoga everyday, swept her own room and washed her own clothes.

पत्रिका के लिये शुल्क

सालाना शुल्क 100 रूपये है, शुल्क कैसे दें

1. आप 9217970381 या 0172–2662870 पर subscribe करने की सूचना दे दें। PIN CODE अवश्य दे
2. **आप चैक या कैश निम्न बैंक मे जमा करवा सकते हैं :–**
   Vedic thoughts, Central bank of India A/C No. 3112975979 **IFC Code - CBIN0280414**
   Bhartendu soood, IDBI Bank - 0272104000055550 **IFC Code - IBKL0000272**
   Bhartendu Sood, Punjab & Sindh Bank - 02421000021195, **IFC Code - PSIB0000242**
3. आप मनीआर्डर या at par का Cheque द्वारा निम्न पते पर भेज सकते है। H. No. 231, Sector 45-A, Chandigarh 160047.
4. दो साल से अधिक का शुल्क या किसी भी तरह का दान व अनुदान न भेजें। शुल्क तभी दें अगर पत्रिका अच्छी लाभप्रद व रूचिकर लगे।

यदि आप बैंक में जमा नहीं करवा सकते तो कृपया at par का चैक भेज दे।

सम्पादकिय

वर्ण व्यवस्था किसी भी रूप में न व्यवहारिक है और न ही स्वीकारिय

अगर किसी व्यवस्था ने भारत को पिछड़ा और गुलाम बनाकर रखा तो वह है वर्ण व्यवस्था। आज सारा देश बंटा हुआ नजर आता है तो उसका कारण है वर्ण व्यवस्था।

भारत में जितना भी मानव उत्पीण हुआ है और एक मनुष्य ने

अपने जैसे ही दूसरे मनुष्य को पशुओं से भी खराब व्यवहार दिया और पैरों के तले रौंदा है तो उसकी जिममेवार है वर्ण व्यवस्था। आज भी भारत की जनसंख्या का एक बड़ा हिस्सा मानविय अधिकारों से वंचित है और अपने आप को उस ईश्वर की सन्तान नहीं मानते जिस की कि उंची जाति वालों को समझा जाता हैं तो उसकी जिम्मेवार है वर्ण व्यवस्था।

चाहे यह वर्ण व्यवस्था जन्म के आधार पर है या फिर कर्म और गुण के आधार पर। चाहे इस का वर्णन वेदों में है या फिर ऋषि मनु ने ही कहा, यह 21सवीं सदी में भारत में किसी भी रूप में न व्यवहारिक है और न ही स्वीकारिय। ।जो चीज एक मानव को दूसरे मानव से दूर करे, जो समाज को बांटे, जो कुछ को दूसरों से अधिक भागयशाली बना दे, ऐसी व्यवस्था जड़ से ही खत्म होनी चाहिये। यह भारतीय समाज पर सदियों से एक बहुत बड़ा कलंक था जो कि चर्चा में भी नहीं आना चाहिये।

न तो यह व्यवस्था जन्म के आधार पर ठीक है न ही कर्म और

Did you know?
Under the rule of the Marathas and the Peshwas the Untouchables might not spit on the ground lest a Hindu should be polluted by touching it with his foot, but had to hang an earthen pot round his neck to hold his spittle. He was made to drag a thorny branch of a tree with him to brush out his footsteps and when a Brahman came by, had to lie at a distance on his face lest his shadow might fall on the Brahman.

गुण के आधार पर। अगर कोई कर्म और गुण के आधार को ठीक मान ही ले तो भी यह आज के समाज में व्यवहारिक नहीं है। आप आज के इस बदले हुये समाज में किस को ब्राहमण और किस को शुद्र कहेंगें। उदाहरण के लिये हवाई जहाज का चालक क्या है और बस का चालक क्या है। डाक्टर क्या है और उसका सहायक कम्पाउडर क्या है। एक ही परिवार में एक बच्चा इंजिनयर है, दूसरा अध्यापक और तीसरा दुकानदार। क्या तीनों अलग अलग जाति के कहला कर एक ही परिवार के सदस्य हो सकते हैं इस से कहीं अच्छा यह नहीं कि जाति के पचड़े में पड़े बिना ं हम उन्हे उन के व्यवसाय से ही जाने।

अगर स्वामी दयानन्द जैसे कुछ महान व्यक्तियों ने इसे जन्म

के आधार को नकार कर, कर्म और गुण के आधार पर मानने की वकालत की तो यह बात उन्होने उस परिस्थिती में कही जब की जन्म के आधार वाली व्यवस्था ने मानव को पशुओं से भी नीच बना दिया हुआ था। पर सच्चाइ यह है कि कर्म और गुण के आधार पर भी यह मानने योग्य नहीं।

इस व्यवस्था का सब से सुन्दर उत्तर तो मध्ययुग के सन्तो कबीर, दादू, नानक आदि ने दिया, जो कि स्वंय ब्राहम्ण वर्ग से न थें।

जाति पाति पूछे न कोई, हरि को भते सो हरि का होई

बदलते समाज में समानता ही मानव का कल्याण कर सकती है। यदि हम जाति पाति के झंझट में पड़े बिना रह सकतें हैं तो क्यों न रहें। हमारा उदेश्य आर्य अर्थात एक अच्छा इंसान बनने पर हो न कि ब्राहमण कहलाने का।

सब से वड़ी बात अगर हम किसी भी प्रकार की वर्णव्यवस्था के बिना प्यार से समाज में रह सकते हैं तो उस व्यवस्था को चाहे उसका मूल कुछ भी हो, लादा की क्यों जाये, खासकर यह जानने के बाद कि वर्णव्यवस्था ने देश, समाज और हिन्दु धर्म का नुकसान ही किया है। इस बारे में पिछले गढ़े मुर्दे उखाड़ना या दोषा रोपण करना भी कीड़ों से बन्द किसी बर्तन के ढकन को खोलना है। ऐसा करना एक दूसरे के बारे में घृणा ही पैदा करेगा, न कि प्यार।

महात्मा हंस राज ने बहुत सही कहा था कि हम वेदों में मानव हित के लिये कही बातों को समझे और धारण करें न कि अन्वेशन के नाम पर उनकी नुक्ताचिनी करते रहें जैसे कि यह संस्कुत के आचार्य वगैरा करते रहते है और लागों में असमंज पैदा करते हैं, इसीलिये आम व्यक्ति वेदों के नजदीक नहीं जाता।

चाहे कोई भी बात वेदों में लिखी है या किसी महान व्यकित ने कही है या आपके माता पिता ने ही कही, देखना यह है कि बदले हुये समय में वह सार्थक है। अगर सार्थक नही तो बदले हुये समय में उस के स्वरूप को कैसे बनाया जा सके। यही बात वर्णव्यवस्थ पर लागू होती है। यह किसी भी रूप में देश, समाज के हित में नहीं इसलिये इसे जड़ से खत्म करना ही सही है ।

अभी आर्यसमाज के सम्मेलन में संस्कृत के 30——40 पडितो ने वर्ण व्यवस्था पर देहरादून के एक गुरूकुल में चर्चा की कि किस रूप में यह होनी चाहिये। फिर जैसे होता है सब ने आपस में एक दूसरे के अभिन्नदन कर लिये, और एक मोटी किताव छाप दी क्योंकि दान देने वालों की कमी नहीं हैं। मेरा पूछना है कि कयों नही हम अपना समय और पैसा, अन्धविश्वासों से पीड़ित लोगों में पहुंच कर आर्य समाज का संदेश जिसमें ऐकेश्वरबाद मुख्य है और जिसके न मानने के कारण सब पाखण्ड फैले हुये हैं, देते हैं। यही महर्षि दयानन्द को ठीक श्रधांजली होगी । हमारा कर्तव्य है कि हम ऐसी संस्थाओं को दान न दें।

श्री राज नाथ सिंह के अंग्रेजी के बारे में वहुत ही व्यवहारिक विचार

गृह मन्त्री श्री राज नाथ सिंह ने अंग्रेजी के बारे में वहुत ही व्यवहारिक विचार दिये। उनका कहना है कि हम अंग्रेजी का विरोद्ध छोड़कर उसे पढ़ें पर साथ ही अंग्रेज न बने। अर्थात वहां अंग्रेजी का प्रयोग न करें जहां हमारी मातृ भाषा से काम चलता है। उन्होने साथ में यह भी स्पष्ट किया कि भारत जैसे बहुत सारी भाषाओं वाले देश में मातृ भाषा का अर्थ है जो भाशा आप को जन्म से मिली है। पर आज के समय में अंग्रेजी जानना बहुत उपयोगी है।

अगर आपको कुछ कहना है या पत्रिका subscribe करनी है

कृप्या निम्न address पर सर्म्पक करें

भारतेन्दु सूद, 231 सैक्टर– 45-ए चण्डीगढ़.160047

0172.2662870, 9217970381, E mail : bhartsood@yahoo.co.in

Be altruistic

Bhartendu Sood

As I see, the reason why the Tibetan religious Guru, His holiness Dalai Lama, has got such a wide acceptance in the present day world divided by narrow considerations of religion, race, languages, sects and castes, is that he preached the religion which makes man a better human being. I am presenting the excerpts from one of his speeches.

The Dalai Lama said, "If I were a doctor, I would write in all my prescriptions to patients: Be altruistic (selfless concern for the welfare of others) and you will get better." The quality of being altruistic should be every human being's top priority on the list of things to be done on any given day. It is this quality — thinking of others before self — that makes one a true human being. Otherwise, any kind of wealth you amass is of no use because you are poorer within by as much.

When you have concern for others, you develop leadership qualities because of which you become fearless and courageous. But when you confine yourself to the 'I', you shrink and your world too shrinks to a dark and fearsome dungeon. You will start feeling insecure and the world outside for you will be foreign and you may take it as dangerous. You will see nothing positive around. You will consider even those who come to help you as your potential enemies. You see danger at every step you take and an enemy in every person you meet. This kind of daily 'happening' can make your life miserable as you will feel insecure even in the most secure place of your home.

But altruism opens up a brave new world. It makes you not only courageous but also kind and helpful. It makes you feel that your power and strength lies in making others feel good and 'powered'. The world is as good as you are, as it reacts the way you do.

As a result, you feel good and on top of the world. You find no excuse not to be at the service of humanity. Virtue and conscience are the tools for altruism.

What Dalai Lama preaches is the essence of Vedas, vasudhevay katumbakam, entire world is one family, Sarve bhavantu sukhina, may all be happy, main message of Geeta-Selfless service is the road to Moksha and main Ardas in Sikhism- 'Sarvat da bhala' may all live in peace and happiness.

Knowledge and igrorance

That by which the true nature of the thing is known is called knowledge. Whilst that by which the true nature of the thing is not revealed and, instead, a false conception of things is formed, is called ignorance

जो आप के पास है उस में आनन्दित हों न कि दूसरों से मुकाबला करें

एक जंगल में एक कौवा रहता था जो कि अपने आप से पूरी तरह से सन्तुष्ट था। पर एक दिन जब उसने एक हंस को देखा तो उसके मन में हलचल हुई——हंस ऐक दम सफेद है जब कि मैं काला। अवश्य हंस दुनिया में सब से खुश होगा। उसने अपने मन की बात हंस को बता दी।

हंस कौवें की बात सुन कर बोला——तुम ठीक कह रहे हों मैं सचमुच अपने आप को, यह सफेद रंग पाकर, सब से सुन्दर समझता था, पर जब से मैने दो रंग वाला तोता देखा है तो मुझे ऐसा लगने लगा है कि तोता सब से खुश होगा।

यह सुनकर कौवा तोते के पास गया और बोला कि हंस का मानना है कि तुम अपने अदभुत दो रंगों के कारण हम पक्षियों में सब से सुन्दर हो। तोता कउऐं की बात सुन कर बोला —— तुम ठीक कह रहे हों मैं सचमुच अपने आप को यह अदभुत दो रंग पाकर सब से सुन्दर समझता था, पर जब से मैने कई रंगो वाला मोर देखा है तो मुझे ऐसा लगने लगा है कि मोर सब से खुश होगा।

यह सुनकर कौवा मोर को मिलने के लिये पास के एक चिड़ियाघर में चला गया। उसने देखा कि सैंकड़ो लोग उस को देख रहे थे। जब लोग चले गये तो कौवा मोर के पास गया और बोला —— प्रिय मोर, तुम कितने सुन्दर हो। रोज हजारों लोग तुम्हें देखने आते हैं। इसके विपरीत अगर मैं कहीं लोगों के आस पास चला जांउ तो मुझ लोग पास भी नहीं फटकने देते और भगा देते है। मुझे ऐसा लगता है कि तुम दुनिया के सब से सुन्दर पक्षी हो।

मोर ने जब कौवें की बात सुनी तो बोला—— तुम ठीक कह रहे हों मैं सचमुच अपने आप को यह अदभुत बहुत सारे रंग के पंख पाकर दुनिया का सब से सुन्दर पक्षि समझता था। पर अब यह महसूस करता हूं कि इस सौंद्रय के कारण ही मुझे पकड़कर इस चिड़ियाघर में रख दिया गया है। मैने धूम कर सारा चिड़ियाघर देखा है और मुझे ऐसे लगा कि सिर्फ कौवा ही ऐसा पक्षी है जिसे यहां पकड़ कर पिजरे में नहीं रखा हुआ। इस लिये पिछले बहुत दिनों से मैं यही सोच रहा हूं कि कितना अच्छा होता अगर मैं कौवा ही होता और एक स्वतंत्र जीवन जीता।

जो कौवें और मोर की समस्या है वही हमसब की समस्या भी है। हम दूसरों को अपने से खुश मान कर दुखी होते रहते हैं। हम उस की कीमत नहीं करते जो हमारे पास है और यही हमारे न खुश रहने का कारण है।

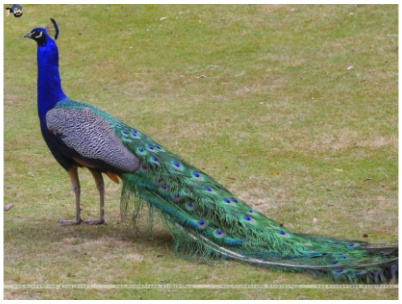

हम कितना कुछ भी प्राप्त कर लें पर फिर भी कुछ ऐसे होंगे जिनके पास कुछ न कुछ हमारे से अधिक होगा और यह भी निश्चित है कि बहुत से के पास हमारे से कम भी होगा। हम सब का अपना एक खुद बनाया हुआ संसार है जिस में खुशी और गम भी हमारे अपने सजोए हुये है। पर जो व्यक्ति जो है उस पर जो नहीं है को प्रबल नहीं होने देता वही खुश रहता है।

प्रकाश औषधालय

थोक व परचून विक्रेता हमदर्द, डाबर, वैद्यनाथ, गुरूकुल, कांगडी, कामधेनु जल व अन्य आर्युवैदिक व युनानी दवाईयाँ

Wholesaler & Retailer of :
HAMDARD, DABUR, BAIDHYANATH,
GURUKUL KANGRI, KAMDHENU JAL
& All kinds of Ayurvedic & Unani Medicines
Booth No. 65, Sec. 20-D, Chandigarh
Tel.: 0172-2708497

सेवा का उतम उदाहरण – राम भक्त शबरी

रामायण में शबरी का प्रसंग आता है, जिसे श्री रामचन्द्र अपने बनवास के दौरान मिले थे। कहते हैं वह शबरी एक भील थी। एक बार वह महर्षि मतडंग से मिली तो उनकी विद्वता से इतनी प्रभावित हुई कि उस में ऋषियों की सेवा करने की तीव्र इच्छा पैदा हो गई। पर शिवरी यह भी जानती थी कि महर्शि मतडंग जैसे योगी उस को महिला होने के कारण अपने आश्रम में रह कर सेवा का मौका नहीं देंगे। न ही उस में यह साहस था कि वह किसी के पास जा कर अपनी इस इच्छा के बारे में बताती। ऐसे में उस ने सेवा के किसी दूसरे मार्ग के बारे में सोचना प्रारम्भ कर दिया।

इसी बीच शबरी के मन में बहुत ही अच्छा विचार आया। उसने एक योजना बनाई और निर्णय लिया कि मैने महर्षि मतडंग की सेवा का व्रत अपने मन की शान्ति के लिये लिया है। इसलिये सेवा का प्रदर्शन करने की आवश्यकता नहीं। सेवा वही है जो प्रदर्शित न की जाये। जिसका प्रदर्शन किया जाये वह सेवा नहीं हो सकती।

इस अपनी योजना को पूरा करने के लिये उसने अपनी कुटिया महर्शि मतडंग के आश्रम के कुछ दूर बना ली और उस में रहने लगी। वह सुवह ब्रहम मूर्त से पहले ही उठ कर जो रास्ता महर्षि मतडंग के आश्रम की और जाता था उसकी सफाई करने शुरू कर देती और पानी का छिड़काव कर देती। यही नहीं जंगल से लकड़ियां चुन कर आश्रम के पास रख देती ताकी महर्शि मतडंग को लकड़ियो चुनने ना जाना पड़े। कुछ ही दिन में कांटों से भरे रास्ते की शक्ल ही बदल गई। महर्षि मतडंग सोचने लगे कि कौन है ऐसा जिसने पहले तो इतना सुन्दर रास्ता बना दिया और अब रोज सफाई कर पानी छिड़क देता है और आश्रम में लकड़ियां भी पहुंचा देता है। इस प्रकार की सेवा करने वाला इस जंगल में कौन आ गया और वह किस भावना से यह सब कर रहा है? सत्य का पता लगाने के लिये उन्होने अपने शिष्यों को यह जिम्मेवारी सौंपी। शिष्यों ने शीघ्र ही पता लगा लिया कि इस प्रकार सेवा करने वाली एक महिला शबरी थी।

महर्षि मतडंग ने शबरी को बुलाकर पूछा कि वह यह सब इस तरह गुप्त रूप में क्यों कर रही है? शबरी ने बहुत ही विनीत भाव से कहा–– महर्षि, मैं एक साधारण महिला हूँ। मेरे दिल में आप जैसे योगी की सेवा की भावना है। परन्तु मुझे पता है कि मेरे महिला होने के कारण आप जैसा योगी मुझे आश्रम में रख कर सेवा का मौका नहीं देगा। इस लिये अपनी भावना को पूरा करने के लिये मैने यह मार्ग ढूंढा। आप से निवेदन है कि मेरी भावना को देखते हुये, मुझ से सेवा का अधिकार न छीने, इस के बिना मेरा जीवन दूभर हो जायेगा।

शबरी की बात सुनकर महर्षि मतडंग द्रवित हो उठे। उन्होने कहा शबरी न केवल महान महिला है पर उसके त्याग और सेवाभाव ने उसे एक सन्यासी बना दिया है। उस की सेवा अद्वितय है । उसकी महानता के सामने मैं नतमस्तक हूं।

यह सत्य है कि निष्काम भाव से की हुई सेवा व्यक्ति को देवता और महात्मा बना देती है और ऐसे व्यक्ति के आगे बड़े बड़े योगी भी नतमस्तक हो जाते है। यही कारण था कि श्री रामचन्द्र ने शबरी से मिलकर उसके हाथ से दिये फल बहुत आदरभाव से स्वीकार किये थे।

What's there in a joke?

Satjit Singh

What's there in a joke?

There is a very old joke: One day, well past midnight, Santa Singh suddenly started laughing. His wife got up.

"Earlier you used to walk and now laugh in sleep", she said and slapped him to wake him up. But he was fully alert and explained, "Don't worry, my dear, it's a joke that made me laugh."

"Someone telling you jokes in dreams?" she quipped.

"No, my dear, a friend told one yesterday but I understood the meaning now, so could not control laughter".

Something similar happened with me many years ago. I was reading the humour section of a magazine. To understand the meaning of a particular word, I just picked up the dictionary and laughed when the meaning of the punch line became clear.

My son Arun, a student of Class V then, asked, in all earnestness, "Papa, are there jokes in dictionaries also?"

It was a bit embarrassing but I admitted the reality.

A few days later, he came back from school and asked me to explain the meaning of a two-line joke, which had appeared at the end of Khushwant Singh's column in The Tribune. It was a sort of 'mild adult' joke.

"You won't understand. Why do you ask about this particular one?" I tried to put him off.

I got the least expected reply, "I memorised and told this joke in the class. Only madam laughed. Now, all my friends insist that I explain the meaning to them."

His class teacher didn't imagine that he was himself reading and reciting the jokes, which she enjoyed. Understandably, she sent a message advising us to avoid sharing such jokes in the presence of children.

The incident raised Arun's curiosity; Why do we laugh? What's there in a joke that makes us laugh? Why some people do and others don't laugh at a joke? How are jokes made and who writes them, etc.

While I was grappling with the challenging questions for some days, another comic (may not be the right word) situation arose. One of our neighbours, an ex-serviceman, was a very typical character. He was always well dressed but hardly smiled. The beard tucked tight in black net, and fatty cheeks bulging out, further highlighted his expressionless face. The children in the colony didn't like him.

One Saturday evening we were going out for dinner. Jagga, the teenaged son of the Major, was walking his dog, a pug, near our car, parked in the lane. Arun stopped and patted the dog lovingly. Looking for a moment at the flat face of the pet, he remarked, impromptu, "Jaggu this dog looks very much like your father."

Before Jagga could react, I pushed Arun into the car and drove away.

When we were at a safe distance, everybody laughed, more because of the near correctness of the observation.But Arun didn't find anything funny in the situation.

I tried to conclude, "You unwittingly made fun of Jaggu's father. That is how jokes are made."

He thought for a moment and said, "But I made fun of the dog and not of his father." That night I saw, in my dream, Major Saab, with a gun in hand, knocking at my door. This story is now about 20 years old and the whole family, including Arun, laughs heartily every time we talk about it.

Jokes apart, the original question still remains unanswered, "What is there in a joke that makes us laugh?"

पुस्तक

सम्पादक व उनकी पत्नी नीला सूद ने अपनी लिखी व विभिन्न अंग्रेजी समाचार पत्रों में छपी 70 कहानियों का संग्रह एक पुस्तक के रूप में प्रकाशित किया है जिसका नाम है **Our musings** इसकी कीमत 150 रूपये है। जो भी इसे लेने के इच्छुक हों वह मात्र 100 रूपया भेज कर या हमारे किसी भी बैंक ऐकांउट **(Bank Account)** में पैसे डाल कर मंगवा सकते है। भेजने का खर्चा हमारा होगा। **Bank Account No** वही हैं जो वैदिक थोटस पत्रिका के लिये है।

मंगवाने से पहले निम्न बातों का कृपया ध्यान रखें :– पुस्तक अंग्रेजी भाषा में है। कहानियां धार्मिक नहीं परन्तु जीवन के विभिन्न पहलुओं से जुड़ी है।

नीला सूद, भारतेन्दु सूद

0172–2662870, 9217970381

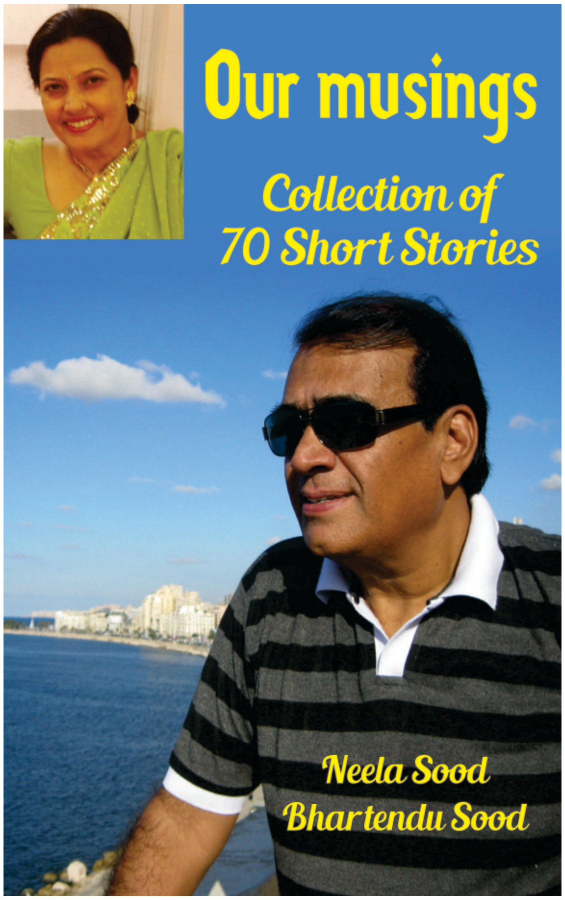

M/S AMMONIA SUPPLY COMPANY

(An ISO 9001-2008 Certified Company)

Joins " VEDIC THOUGHTS" in its noble Pursuit of spreading 'Moral Values

स्वार्थ की प्रवृति मनुष्य की सब से बड़ी शत्रु है। इस से कैसे बचा जाये? अनुभव यह बताता है कि जब हम यह मानकर चलते हैं कि

(1) हम सभी एक ही परमात्मा की सन्तान है और मेरी खुशी सभी की खुशी में है।

(2) इस संसार में सब कुछ मेरे लिये नहीं। प्रभु की दी हुई समपदा सब के लिये है।

(3) मैं खाली हाथ ही इस संसार में आया था और खाली हाथ ही चला जाउंगा। कुछ भी मेरे साथ नहीं जायेगा

तो हम अवश्यं स्वार्थसे उपर उठाकर परमार्थ की और प्रेरित होते है। ''प्रत्येक को अपनी ही उन्नति में सन्तुष्ट न रहना चाहिय, किन्तु सबकी उन्नति में अपनी उन्नति समझनी चाहिये।'' यह आर्य समाज का नवां् नियम है।

SUPPLIERS OF ANHYDROUS AMMONIA AND LIQUOR AMMONIA

D-4 Industrial Focal Point, Derabassi, District (Mohali) Punjab

Contact:- Rakesh Bhargav, Branch Manager 093161-34239, 01762-652465

Fax 01762-282894. Email- asco.db@ascoindia.com & ascodb@gmail.com

आर्य और हिन्दू

कृष्ण चन्द्र गग

वेद, शास्त्र, मनुस्मृति, उपनिषद्, रामायण, महाभारत, गीता आदि सभी प्राचीन ग्रन्थों में आर्य शब्द ही मिलता है, हिन्दू नहीं। संस्कृत के कोष 'शब्दकल्पद्रुम' में आर्य शब्द के अर्थ – पूज्य, श्रेष्ठ, धार्मिक, उदार, न्यायकारी, मेहनत करने वाला आदि किये हैं।

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्। (ऋग्वेद 9 – 63 – 5) अर्थ – सारे संसार को आर्य (श्रेष्ठ) बनाओ।

अनार्य इति मामार्याः पुत्र विक्रायकं ध्रुवम्। (वाल्मीकि रामायण– अयोध्या काण्ड) अर्थ – (राजा दशरथ राम को वन में भेजना न चाहते थे) वे कहते हैं – आर्य लोग (सज्जन) मुझ पुत्र बेचने वाले को निश्चय ही अनार्य (दुष्ट) बताएंगे। हिन्दू शब्द मुसलमानों ने घृणा के रूप में हमें दिया है। यह फारसी भाषा का शब्द है। फारसी भाषा के शब्दकोष में 'हिन्दू' का अर्थ है – चोर, डाकू, गुलाम, काफिर, काला आदि। मुसलमान आक्रमणकारी जब भारत में आए उन्होंने यहां के लोगों को लूटा, मारा तथा पकड़ कर गुलाम बनाकर अपने साथ अपने देश में ले गए। वहां ले जाकर उनसे अनाज पिसवाया, घास खुदवाया, मल–मूत्र आदि उठवाया तथा बाजारों में बेचा। तब उन्होंने यहां के लोगों को 'हिन्दू' नाम दिया। आठवीं सदी से पहले यानि कि मुसलमानों के आने से पहले भारतवर्ष में हिन्दू शब्द का प्रचलन न था, सब जगह आर्य और आर्यावर्त्त शब्द ही प्रसिद्ध थे। चीनी यात्री ह्यूनसांग भारत में सातवीं सदी में (सन् 631 से 645 तक) आया था। वह इस देश का नाम आर्य देश लिखता है। सन् 1870 में काशी में टेढ़ा नीम नामक स्थान पर काशी के राजा के अधीन एक धर्मसभा हुई। सभा में विश्वनाथ शर्मा, बाबा शास्त्री आदि 45 विद्वानों ने विचार विमर्श के बाद यह व्यवस्था दी थी कि 'हिन्दू' नाम हमारा नहीं है, यह मुसलमानों की भाषा का है और इसका अर्थ है अधर्मी। अतः इसे कोई स्वीकार न करे। हिन्दू–शब्दो हि यवनेषु अधर्मीजन बोधकः। अतो नाहर्ति तत् शब्द बोध्यतां सकलो जनः।।

इसलिये जो आजकल हिन्दू नाम से जाने जाते हैं, ही भारतवर्ष के मूल निवासी हैं व आर्य हैं– संसार में सबसे पुराने कोई ग्रन्थ हैं तो वे हैं आर्यों के ग्रन्थ – वेद। संसार में सबसे पुराना कोई साहित्य है तो वह है आर्यों का संस्कृत भाषा में साहित्य। संस्कृत के किसी ग्रन्थ में ऐसा नहीं लिखा है कि आर्य भारतवर्ष में कहीं बाहर से आए थे। इस देश का नाम पहले आर्यावर्त्त था ऐसा बहुत से ग्रन्थों में लिखा मिलता है। आर्यावर्त्त से पहले इस देश का क्या नाम था कहीं भी नहीं लिखा मिलता। अतः निश्चित है कि आर्यों से पहले इस देश में कोई और न था और न ही इस देश का कोई और नाम था। इसलिए यह बात कि 'आर्य' इस देश में कहीं बाहर से आकर बसे थे' सत्य नहीं है। आर्यों (हिन्दूओं) में फूट डालने के लिए द्रविड़ों को आर्यों से भिन्न बताया गया था। जबकि वास्तविकता यह है कि द्रविड़ शब्द आर्य ब्राह्मणों के दस कुलों में से पांच कुलों में होता है जिसमें आदि शंकराचार्य जैसे ब्राह्मण पैदा हुए। पीछे रूस में एक अंतर्राष्ट्रीय गोष्ठी हुई थी। उसमें भारत सरकार के एक प्रतिनिधि मण्डल ने भी भाग लिया था। उस प्रतिनिधि मण्डल में इतिहासविद, भाषा वैज्ञानिक तथा पुरातत्त्ववेत्ता थे। उन्होंने गोष्ठी में भाग लेते हुए आर्यों (हिन्दुओं) के ईरान, अफगानिस्तान, मध्य एशिया आदि से आकर भारत में बस जाने की बात का एकमत होकर खण्डन किया था और उनके इस मत को गोष्ठी में उपस्थित सभी देशों के प्रतिनिधियों ने बहुत सराहा था। यह समाचार 'हिन्दुस्तान टाइम्स' के 31 अक्तूबर 1977 के अंक में छपा था। ईरान के स्कूलों में बच्चों को पढ़ाया जाता रहा है ''आर्यों का एक समूह ईरान की ओर आया और यहीं बस गया। इसलिए अपने नाम पर उन्होंने इस देश का नाम ईरान रखा। हम उन आर्यों की सन्तान हैं।''

डेविड फ्रौले **(David Frauley)** ने एक पुस्तक लिखी है जिसका नमा है 'दी मिथ ऑफ दी आर्यन इनवेजन ऑफ इण्डिया'। वह लिखता है कि आर्यों के भारतवर्ष में कहीं बाहर से आने की बात तथा यहां के लोगों पर हमले की बात दोनों ही निराधार हैं। वह लिखता है कि भारत में आर्यों तथा अन्यों में धर्म और संस्कृति के आधार पर कोई भी भेद नहीं है। आर्य भारतवर्ष के ही मूल निवासी हैं।

महर्षि दयानन्द सरस्वती का मत है कि आर्य इसी देश के मूलनिवासी हैं। उन्होंने अपने सुप्रसिद्ध ग्रन्थ 'सत्यार्थ प्रकाश' में महाभारत काल से लेकर मुसलमानों का शासन आरम्भ होने तक यानि कि अब से पाँच हजार वर्ष पूर्व से लेकर आठ सौ वर्ष पूर्व तक दिल्ली पर शासन करने वाले सभी आर्य राजाओं के नाम तथा उनके शासन काल दिए हैं। इनमें महाराज युधिष्ठिर से लेकर महाराजा यशपाल तक एक सौ चौबीस राजे हुए जिन्होंने कुल चार हजार एक सौ सत्तावन वर्ष, नौ महीने, चौदह दिन राज्य किया। महाराजा युधिष्ठिर

Heart health

Many people suffer heart attacks. Some seemingly strike without any warning. Often the victim looked in good health one day, the next he was dead. Food is not just to satisfy hunger, it was a natural medicine.It is the primary responsibility of individuals to prevent becoming victims of heart disease by regulating their intake of food, as well as their other habits. Prevention is better than cure. Victims of heart attack deaths are getting younger. Not long ago, I heard from a father that his 10-year-old son had a serious heart blockage due to eating too much fat. These included meats, fried foods, cheese, butter, potato chips and curds. What was once considered a rare treat: cakes, pastries, ice creams, sweets and savouries had now become a part of the daily diet of the boy. The father was berating himself for not knowing how damaging such foods are.

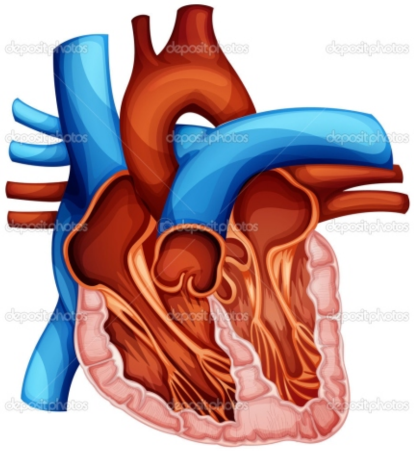

It is the primary responsibility of individuals to prevent becoming victims of heart disease by regulating their intake of food, as well as their other habits. Prevention is better than cure. There would be no room for cardiac ailments if the eating habits of individuals was properly controlled and regulated.

We should educate children not only about history, math and science; but we should teach early on the importance of food intake. The children will flourish academically if **sathwic** food is cooked and served with love.

Research has revealed that nonvgetarians and alcoholics are more prone to heart ailments than vegetarians. If the vegetarian food consumed is balanced and wholesome, it should contain liberal amounts of vitamin C and vitamin E, which are available in vegetables like carrots, etc. The presence of these vitamins prevents heart ailments in large measure.

Every effort should be made to keep the human body healthy. Health is wealth. The acquisition of wealth cannot be enjoyed by a person with poor health. Health is more important because it gives physical and mental strength.

The heart is a special organ in the human system. It is pulsating ceaselessly unlike the other organs. Heart surgery is a highly complex operation, as the surgery has to be performed without arresting the heartbeat. At the same time, the functioning of the lungs has also to be kept up.

A wise man said very rightly, "Worry causes hurry, and both of them together bring about ill health. So, worry, hurry and curry (fatty foods) are the root causes of cardiac ailments."

पृष्ठ 14 का शेष

से पहले के सभी राजाओं के नाम महाभारत में लिखे हैं। इस बात से पूरी तरह प्रमाणित हो जाता है कि आर्य ही सदा से इस भूमि पर रह रह हैं। **831 सैक्टर 10, पंचकूला, हरियाणा दूरभाष :0172–4010679**

श्री कृष्ण चन्द्र गर्ग प्रोफैसर हैं और कई वर्ष तक अमेरिका में भी पढ़ाते रहे हैं। वह बहुत सम्पिर्त आर्य समाजी है।

परिवार में आपसी सहयोग व ज़िम्मेदारी की भावना से ही संभव है हर समस्या का समाधान

सीता राम गुप्ता,

कई बार घर में किसी एक सदस्य के साथ या सामूहिक रूप से कोई समस्या उत्पन्न हो जाती है और कई बार वह समस्या कम होने की बजाय बढ़ती ही चली जाती है। समस्या कितनी ही छोटी क्यों न हो उसका समाधान ज़रूरी है क्योंकि प्रारंभ में हर समस्या छोटी ही होती है व उपचार के अभाव में बड़ी होकर विकराल रूप धारण कर सकती है। यदि समय रहते ध्यान दिया गया होता तो कोई भी भयंकर से भयंकर आग इतनी बड़ी नहीं थी जिसे केवल एक प्याली पानी से बुझाना संभव न होता। यही स्थिति समस्याओं की भी होती है। वैसे तो कोई भी समस्या ऐसी होती ही नहीं जिसका कोई न कोई समाधान या उपचार न हो और जिसका समाधान या उपचार न हो उसे यथावत स्वीकार कर लेने में ही उसका समाधान व सबकी भलाई है। किसी भी समस्या के समाधान में कुछ बातें अनिवार्य हैं। जब तक हम समस्या को स्वीकार नहीं करेंगे उसका विश्लेशण व उचपार भी संभव नहीं। किसी भी समस्या के लिए कोई न कोई उत्तरदायी भी होता है।

समस्या उस समय विकराल रूप ले लेती है जब हम उसके लिए परिवार के अन्य सदस्यों पर दोषारोपण करना शुरू कर देते हैं। आप घर के अन्य सदस्यों को दोषी ठहरा रहे हैं और वे इसके लिए आपको या घर के अन्य सदस्यों को दोषी करार दे रहे हैं। ऐसे में संभव है कि सभी लोग थोड़े बहुत दोषी हों क्योंकि सभी ने अपने पार्ट को गंभीरता से न लेकर उसे दूसरे का उत्तरायित्व मान लिया हो। या फिर कोई भी दोषी न हो और अज्ञानतावश या अपने निरर्थक बचाव में एक–दूसरे को दोष दे रहे हों। ऐसे में यदि हम दूसरों को दोष देने की बजाय ध्यानपूर्वक समस्या का विश्लेशण करें और हमारे पार्ट में जो ग़लती या सहयोग की कमी हुई है उसे स्वीकार करें तो समस्या का हल निकालना सरल होगा। कई बार सीधे तौर पर हमारी ग़लती नहीं होती है लेकिन हमारी असावधानी या उपेक्षा अवश्य होती है।

मान लीजिए कपड़े धोना, सुखाना व सूखने के बाद उन्हें रखना आपका काम नहीं है। किसी दिन बालकनी या छत पर कपड़े सूख रहे हैं और घर पर आपके अतिरिक्त अन्य कोई नहीं है और बारिश आ जाती है। ऐसे में हर हाल में कपड़े उतार कर रखना आपका दायित्व बनता है। जब तक हममें दूसरों के दोष निकालने व दूसरों को ज़िम्मेदार ठहराने की आदत बनी रहेगी हम किसी भी समस्या के समाधान के लिए मन से प्रयास भी नहीं करेंगे। ग़लती मानने का सीधा सा अर्थ है कि हम भविष्य में उसके प्रति पूरी तरह से सचेत रहेंगे और ग़लती दोहराई नहीं जाएगी। यदि हम अपनी ग़लतियों का उत्तरदायित्व ले लेते हैं तो हम उन्हें दूर करने की भरसक कोशिश करेंगे इसमें संदेह नहीं। परिवार के सभी सदस्य अपनी–अपनी ग़लती स्वीकार कर सभी उसे दूर करने में लग जाएँ तो ग़लती सुधरते या समस्या का समाधान होते देर नहीं लगेगी।

दूसरों पर दोषारोपण करने का अर्थ है अपनी ऊर्जा का दुरुपयोग। समस्याओं के लिए परिवार में परस्पर एक–दूसरे पर दोषारोपण से कलह व क्रोध की स्थिति उत्पन्न हो जाती है। कलह व क्रोध से व्यक्ति की ऊर्जा का ह्रास होता है। अपनी सारी ऊर्जा को हम समस्या के समाधान में न लगाकर अपने–अपने बचाव में लगा देते हैं। वह नकारात्मक दिशा में

चैनेलाइज़ हो जाती है। जब तक हम अपना बचाव करते रहेंगे समस्या का समाधान संभव ही नहीं। हमें हर हाल में ज़िम्मेदारी लेने के लिए तैयार होना होगा और घर के दूसरे सदस्यों की छोटी–मोटी भूलों व कमियों को भी नज़रअंदाज़ करने का साहस दिखलाना होगा तभी हमारी ऊर्जा का सही व सकारात्मक उपयोग एवं हमारी समस्याओं का सही समाधान संभव होगा। जब हम मिलजुल कर समस्याओं का समाधान निकाल लेते हैं तो इससे परिवार के सभी सदस्यों के बीच आपसी संबंध भी अधिकाधिक मधुर, विश्वसनीय व दृढ़तर हो जाते हैं।

जब कोई भी व्यक्ति ज़िम्मेदारी ले लेता है तो बाक़ी सभी लोग उसकी मदद के लिए स्वतः तैयार हो जाते हैं। यदि परिवार के सभी लोग परस्पर दोषारोपण छोड़कर सकारात्मक चिंतन व परस्पर सहयोग का रास्ता अपना लें तो सबकी क्षमता व ऊर्जा का सदुपयोग होने से न केवल समस्याओं से मुक्ति मिलेगी अपितु घर–परिवार में कलह व क्रोध की बजाय हँसी–खुशी का माहौल बनाए रखने में भी सहायता मिलेगी। इसके लिए मैं ही क्यों पहल करूँ यह सोचना संकुचित मानसिकता का द्योतक है। कोई भी अच्छी पहल करना कमज़ोरी नहीं आपके व्यक्तित्व का अत्यंत प्रबल पक्ष है। परिवार में वास्तविक सुख, शांति व समृद्धि तभी संभव है जब हर सदस्य मन में ये दृढ़ निश्चय कर ले कि उसे सबसे अधिक जिम्मेदारी से कार्य करना है। अधिकारों की बजाय अपने कर्त्तव्यों व दायित्वों को अधिक महत्त्वपूर्ण मानकर ही हम परिवार को आदर्श परिवार का रूप प्रदान कर सकते हैं। याद रखिए यदि हम किसी समस्या का समाधान नहीं कर पाते हैं तो हम स्वयं ही सबसे बड़ी समस्या हैं।

ए. डी. 106–सी, पीतम पुरा, दिल्ली – 110034

फोन नं 09555622323

Email : srgupta54@yahoo.co.in

नेपाल के गाधीमई मन्दिर में पशुओं की बली बन्द हुई

नेपाल के गाधीमई मन्दिर में हर पांच साल में लगने वाले मेले में देवी को खुश करने के लिये पांच लाखं पशुओं की बली दी जाती थी। इस 300 साल से चले आ रहे मेले में 40 लाख हिन्दु पहुंचते थे जिन में अधिक उतर प्रदेश और बिहार के होते है। प्रसन्नता की बात है कि वहां के अधिकारियों ने ंएक निर्णय लेकर पशुओं की बली बन्द कर दी है। अभी जब नेपाल में भूकम्प आया था, उस से कुछ महीने पहले ही भूकम्प वाले स्थान पर ही लाखों पशुओं की बली दी गई थी।

वहां के अधिकारियों ने यह घोशणा की है कि अगले मेले के अवसर पर एक भी बून्द खून की नहीं बहाई जायेगी। वहां के मुख्य अधिकारी शाह ने कहा––पिछले सेंकड़ों सालों से लोगों ने अपने जीवन को अच्छा बनाने के लिये देवी के आगे लाखों पशुओं की बली दी। पर यह सत्य है कि अपनी खुशी के लिये किसी दूसरे प्राणी के प्राण लेने से दिल में एक बोझ तो पड़ता है कि हम गलत कर रहें हैं। अब समय आ गया है कि हम इस परम्परा को खत्म करें। और इस खून खराबे और हिंसा का स्थान शातिंमय ढंग से पूजा और अर्चना को दें।

यहां यह बता देना आवश्यक है कि भारतीय उच्चतम न्यायालय के एक निर्णय, जिस में कि भारत से नेपाल को पशुओं का निर्यात बन्द किया गया, ने भी बहुत असर डाला। पर सब से बड़ा असर इस भूकम्प का हुआ। लोगों को कर्मभोग का सिधान्तं समझ आ गया, कि बुरे काम का बुरा ही फल होता हैं और वह न्यायकारी प्रभु के दण्डित करने के अपने ही तरीके है। यहां यह बताना आवयक है कि **पशु बली को बन्द करने के लिये सम्पादक ने भी नेपाल टाईम्स को लेख भेजा था। यह लेख छापा गया जो इस बात को सिद्ध करता है कि बहुत से लोग नेपाल मे इस बहुत ही गन्दी प्रथा को खत्म करने के बारे में सोच रहे थे।**

भारत में बहुत से प्रान्त ऐसे है जहां मन्दिरों में पशु बली की प्रथा चल रही है। गुहावटी में स्थित खामखया मन्दिर में तो हर समय लोगों की एक लम्बी लाईन देखी जा सकती हैं। सरकार को इसे बन्द करने का निर्णय लेना चाहिये।

वैदिक प्रार्थना

शन्नो देवीरभष्िटय आपो भवन्तु पीतये |

शंयोरभि स्रिवन्तु न: || यजु 36.12 पुनरुक्त ऋ10.9.4, साम 33, अथर्व 1.6.1

हमारे जीवन में सुख की सिद्दि के लिये और सब और से इष्ट की ईच्छा की पूर्ती के लिये पीने के लिये दिव्य गुणों वाला जल प्राप्त हो। ये जल हमारे सभी रोग आदि दूर करने में सहायक हो।

जिज्ञासा उत्पन्न होती है कि वह कौन सा दिव्य गुणो वाला जल है जो सब और से मानव शरीर में प्रभावित हो और रोग आदि को दूर कर सुख की वर्षा करे।

इस संदर्भ में यर्जुदेव के निम्न मंत्र में ऐसे जल के समुद्र का वर्णन किया है जो सब और से से सुख के प्रदान करने वाला होता है।

समुद्रोसनिभस्वानार्द्ररदानु:

शम्भूर्मयोभूरतमिा वाहस्विाहा| यजु 18.45अ

नभस्वानार्द्ररदानु से नभस्वानार्द्ररदानु

जो जल स्वयं टूट कर औरों के प्रति दयाद्र हृदय वाला होता है, ऐसा ही जल सब रोगों को दूर करता है। आधुनिक विज्ञान के अनुसार जब जल प्रपाताके और भंवर से प्रभावित होता है। जैसे की पर्वतिय क्षेत्रों में गंगा आदि नदियों का होता है।

Drink Right Water

The vital difference that surface tension of water makes to Human Body

There are five places on Earth where the people routinely live to over 120 years of age in good health with virtually no cancer or dental caries (decay of a bone or tooth), where they remain robust and strong and are also able to bear children even in old age, and the most famous of these, Hunza in the Himalayas, has people who live to 120-140 years old. There are also villages in France where the people are extremely healthy and other villages where the people are run-down. Much research has proven conclusively that the major common denominator of the healthy long-living people is their local water.

One of them is that the surface tension of Hunza water is much lower than ordinary water. Ordinary water has a surface tension of 73 dynes per centimeter - a dyne is a very small unit of force, the amount needed to break the surface skin of the water. Lower surface tension results in "wetter water".

Water flowing in nature, as down a mountain stream, has less surface tension than that coming from your city water supply. Water cleans itself in nature when it flows. Flowing water found in nature is “structured” meaning it has a vitality, neutral pH (acid/alkaline balance), and is free of memory. The structuring refers to the shape of the molecules themselves, which produce a low surface tension when gathered together.

Experimental research on Surface tension of the some of the natural compounds

conducted by Dr. A.K Agnihotri.

Subodh Kumar, C-61 Ramprasth, Ghaziabad-201011 Mobile-9810612898

Then and now

Has a letter from you, a run-of-the-mill citizen of this country, to the Prime Minister, the President, a Chief Minister, or any other high dignitary received a reply, or even an acknowledgement? If it has, you are lucky!

However, these dignitaries and the likes of them were not so busy in the times gone by! Or, they had in place a system which cared for ordinary mortals.

My uncle, who is no more now, used to give tuition to a small girl of English parentage at their home some time in 1938 or so when he himself was a student of law. One evening, as he arrived at their place, he heard the mother admonishing the child: "If you don't behave, I shall beat you before an Indian."

My uncle's pride was hurt. However, he also could not let go the tuition as it fetched him a badly needed income. Caught in the dilemma, he wrote to Mahatma Gandhi seeking his advice. And lo and behold, the Mahatma, who would have been busy with a myriad other problems, replied to him within a fortnight advising him to take a decision according to his own conscience. My uncle, thereupon, immediately left the job apprising the English couple the reasons behind doing so.

On the basis of the results of the high school examination of the Uttar Pradesh Board in 1960, I was awarded a Government of India merit scholarship of Rs 50 per month in the two years of the intermediate classes, which could continue @ Rs 75 per month during the two years of BSc and @ Rs 100 per month during the two years of MSc on the condition that one secured a first division in the previous yearly examination.

The scholarship was continued in BSc in Lucknow University. I, thereafter, joined BSc (Hons) admission to which was restricted to a select few out of those who had secured a first division in BSc. The course entailed doing one additional paper over and above what the MSc (1st year) students did. Also, after doing BSc (Hons),one could do MSc (Special) in just one year. Thus, the course of BSc (Hons) was, for all intents and purposes, a postgraduate course.

When the sanction for the merit scholarship came from the Government of India for BSc (Hons),it was @ Rs 75 per month only. I was greatly dismayed. I met the Head of the Department and the Dean of the Faculty but none could suggest any solution.

M.C. Chagla, a renowned Indian jurist, diplomat, and Cabinet Minister

I then wrote a letter to MC Chagla, the then Minister of Education, Government of India, invoking his "innate sense of justice as a former Judge, and a former Chief Justice of the Bombay High Court". I apprised him of the peculiar nature of the course of BSc (Hons) and requested him to treat it as equivalent to a postgraduate course and enhance my scholarship to Rs 100 per month as per the scale prescribed for postgraduate classes.

I received an acknowledgement from his office. And my joy knew no bounds when a letter from his ministry within a month informed me that my request had been acceded to.

MC Chagla died in 1981.The inscription on the plinth of his statue unveiled in 1985 and placed outside the Chief Justice's court in the Bombay High Court reads: "A great Judge, a great citizen, and above all, a great human being."

धर्म का आधार है अच्छाईयां

अशोक कुमार

जिस प्रकार सूर्य, चांद, पृथ्वी का मानव जीवन में महत्व है, उसी प्रकार अच्छाईयां भी व्यक्तित्व का महत्वपूर्ण गुण है। अच्छाई की परिभाषा मानवीय गुणों का होना, पिशाच परिवृतियां रहित से है। वैसे तो अच्छाई को हर कोई अपने माप दण्ड से आंकता है, कुछ का कहना है कि अच्छाई का भाव है व्यक्ति का अच्छा स्वभाव, आचरण, सोच–सुधार और कार्यविधि, शासनीय, विश्वासनीय, नैतकीय गुण आदि। इस प्रकार सरल भाषा में अच्छाई से अर्थ है धार्मिकता, भद्रता और बैर–विपरीत कार्य–प्रणाली। अच्छाई एक सुगंधित सुमन के समान है जो कि दूसरों को भी अपनी सुगन्ध का आन्नद देती है। अच्छाई का आधार है धर्म।

सत्य, धैर्य, क्षमा, इच्छाओ ं का दमन, अस्तेय अर्थात् चोरी की प्रवृत्ति का त्याग, शौच अर्थात अपनी व आसपास के वातावरण की सफाई, इन्द्रिय निग्रह, ज्ञान द्वारा विवेक सहनशीलता,संवेदनशीलत ा, उदारचित होना आदि गुणों को धारण करने में तत्पर रहे, यही धर्म है औरयही गुण मनुष्य को अच्छे आचरण की और ले जाते हैं।

जो जाति, नस्ल, रंग भेद करता है वह धर्म नहीं, अधर्म है। धर्म का मुख्य कार्य मानव को सुमार्ग दिखाना है। किसी प्रवचनकर्ता का कहना है कि जीवन में धर्म का मुख्य उद्देश्य जीवन के कर्मो को संतूलित–तालिका निर्माण करना है, या आप कह सकते हैं कि पाप–पुण्य से अवगत करवाना। पाप–पुण्य का गणित है।अच्छा व्यवहार बनाना मन–वचन को सुंदर बनाना व आपके कर्म को प्रिय बनाये न कि दूसरों को दुख देने वाला

धर्म वह है जो हमें मानवता कि और ले जाये। और मानवता वह है जो हमें अच्छाई की और प्रेरित करे। अच्छाई का भाव है कि आपके कार्य सहयोग युक्त हो, निपटारे, संतोषजनक हों, पीड़ितों और दुखियों को संतावना का मरहम मिले, कार्यों में विवाद–प्रतिवाद, विरोध न बनें, आन्तरिकता का पता चले। बस अच्छाई से भाव है सहानुभूति, सहयोग, सहायता, किसी के लक्ष्य प्राप्ति करने में सेतु बने। धैर्य और साहस की दो बूंदे जीवन दिशा बदल देती है जिससे आन्तरिक शक्तियों को बल मिलता है और सत्य को समक्ष लाना आदि। सत्य को पारदर्शी करना, सत्य स्वयं बोलता है, सत्य अभ्यास है, सत्य ऊर्जा है, अच्छाई से ही ऊर्जा निकलती है।

महाभारत में विदुरनीति के अन्तर्गत श्लोक है – नासौ धर्मो यत्र न सत्यमस्ति। न तत् सत्यं यत् छलेनाभ्युपेतम्।। (विदुरनीति 3–58) अर्थ – वह धर्म नहीं है जहां सत्य नहीं है। वह सत्य नहीं है जिसमें छल है।

अच्छाईयों की मुख्य पहचान त्याग, धैय, क्षमा, संतोष, सहनशीलता अहिंसा जैसे गुण। चाणक्य ने अच्छाई को परिभाषित करते कहा कि नीच प्रवृति के लोग दूसरों के दिलों को चोट पहुॅचाने वाली, उनके विश्वास को छलनी करने वाली बातें करते हैं। दूसरों की बुराई कर खुश हो जाते हैं मगर ऐसे लोग अपनी बड़ी कपटी, झूठी बातों के बुनें जाल में खुद ही फंस जाते हैं, जिस तरह से रेत के टीलों को अपनी बाम्बी समझ कर सांप घुस जाता है उसी तरह ऐसे लोग भी अपनी बुराईयों के बोझ तले मर जाते हैं। परख संकट में होती है, अर्थात आपकी स्वयं की कृतियां ही न बनें आपके लिए मृत्युऐं, भय, लज्जा, संकोच का दमन अच्छाईयों से होता है, सुधारवादी सोच रखनी होती है। कमजोर व्यक्ति की कमजोरी का लाभ नहीं उठाना, अगर मित्रता में स्वार्थ आ गया तो वहां पर कांटे कुटीले, पौधे, सूखी घास जैसी मैत्री अंकुरित होती है, ये अच्छाई नहीं अधर्म है। वह आचार, विहार जो गंगा जैसा बने, जो कभी दूषित समझा ही न जाये, वही अच्छाई कहलाऐ। किसी के साथ दो कदम विश्वास के, किसी

के साथ दो शब्द प्यार के, किसी की पीड़ा में दो पल मुस्कान के ही अच्छाई बनती है। कुछ देने को तत्पर रहो, अपेक्षा शून्य करनी होगी, दीन–हीन दानव से भी प्रेम पा सकते हैं, सबका सम्मान हो, दूसरों के लिए आदर्श बनें, छोटी छोटी बातों में खुशियां ढूंढना जो अनोखी लगे जो चमत्कारी बनें। भूल हो जाये तो पश्चाताप हों, ऐसी शैली जो अभद्रता का विरोध करे, जिससे भारतीय, भारतीय गुरू–शास्त्र–वैद–ऋषि चेतना, उपदेश, साधना यानि कि वैदिक ज्ञान का प्रसार हो, शुद्धता, दिव्यता, आस्तिकता, आस्था से जीना सिखाये भी धर्म का आधार है। हमारे पुरूषार्थ शुद्ध हो, स्वयं धर्म निष्ठा हो और हट–हंकार, हवस–विकार न उपजे, आतंक का अंत हो, वासनाओं को वनवास मिले, प्रेम की तिजोरियों खुले, न गुट बनें न बारूद फटे, भोजन बनें परिश्रम से, यही योग यौवन बने, एक ही निरांकार को नमस्कार हो। नारी समान, संतान–पथ–भ्रष्टता से सुरक्षित हो। रक्त–संबंध–शुद्धता बनें, कोशिशों को दिशा मिले, लिंग–अंतर हत्या पवन बने, न आदेश हो, न निषेध हो, बाग ही अमन के हों, न जिंदगियां जहां बुझे, जीवन की बस कदर हो, जो रब की रजा लगे, वृद्धों का सांस मिले, बस शास्त्र पढ़े, हिंसा का खात्मा हो, ज्ञान की ज्योति जगे, सांम्प्रदायिक्ता की चिंगारी न बनें, विद्या विस्तार हो, मानवता का कल्याण हो वही अच्छाईयों का पुंज बनें। श्रेष्ठ लोग अच्छाईयों का प्रकटावा नहीं करतें। अच्छाई स्वयं चमकती है, बोलती है, दिखती है, अच्छाई केवल दूसरों के लिए नहीं स्वयं के लिए भी होती है जिसके समय–सीमा नहीं होती। आपका अच्छा कर्म दूसरों के लिए जीवन दायिनी है। दूसरों को भी छोटे–छोटे कृत–कर्म करने को प्रेरित करते हैं जिससे पाप कमजोर होता है, धर्म फसल उपजने लगती है। धर्म का अर्थ पाठ–पूजा नहीं बल्कि श्रेष्ट कर्म है फूलों के समान रहने का उपदेश दे वही धर्म कहलाऐ।

वाल्मिकी जी ने कहा कि क्षमा करना भी अच्छाई है, क्षमा ही धर्म है, सत्य है, दान है, यज्ञ है और यश है, जिससे दूसरों को सुख सकून प्राप्त हो और बिना मूल्य और आडम्बर के शांति बाग लगाना सीखो, आग नहीं। नम्रता भी एक ऐसा आभूषण जो सबको बस में कर लेता है, इस प्रकार नमस्कार के लिए न निमंत्रण हो, निर्णय सभी का स्वतंत्र हो, बाध्य करने को न दण्डतंत्र हो, परीक्षाओं में पवित्रता बनें, मानसिकता में न छिद्र दिखें, न मिलावटें हों न घोटाले, आंतक न परोसे कोई बस प्रेम वाणी के ताल बनें। इस प्रकार अच्छाई का एक अन्य रूप भी है । जिन कृतियों से गैर भी अपना लगे, विश्व परिवार बनें, स्वयं उतना ही रखें जितने को भोग पाये, शेष का त्याग हो, आश्रम, पिंगलवाड़े बनें। विकल्प मिले, कलाप नहीं, संकल्प बने श्राप नहीं। जिस प्रकार सभी पक्षी वृक्ष पर बैठ कर रात काट लेते हैं, प्रातः प्रेम से गीत गाते, प्रभु का अभार व्यक्त कर प्रवास कर जाते हैं तो उसी प्रकार यह जग मानव के लिए सराय है, तो क्यों न अच्छाई कर के ही इस दुनियां से जायें, मानव–मानव में भेद न रहे, सतकर्म और परहित परम–धर्म और प्रेरणा दीप बनें। अच्छाईयों में बड़प्पन का अटूट संबंध है। स्वामी विवेकानन्द ने कहा था कि अच्छाई से भाव है कि अहंकार का त्याग, अगर अहंकार चला गया तो किसी धर्म पुस्तक और दैवालय की आवश्यकता नहीं, वही धर्म है, मनुष्य ही साक्षात मंदिर। जिस प्रकार नमक बिना भोजन फीका लगता है उसी प्रकार अच्छाई बिना जीवन नीरस और फीका है। इस प्रकार अच्छाई धर्म का आधार है। **फोन न. 9878922336**

Ambition

Ambition is somewhat like a burning fire, which can be adopted constructively or destructively. Constructively speaking, it's essential. Just like the way fire is needed to whip out good food, we need ambition to pep up our life, which otherwise may be pedestrian and pretty jejune. To set up a manufacturing unit which provides employment to others and gives you profit also is onr example of it.

And destructively, ambition can be like a raging inferno, which can destroy even sky-scrapers, just like the way it can extinguish one's health and happiness, if left unchecked. To open a Ponzy Finance company to get rich is one example of it.

ज्ञान और अज्ञान क्या है

जो सदैव नहीं रहने वाला उसको स्थिर मानना जैसे कि मानव सदैव रहने वाला नहीं हैं पर उसको ईश्वर मानकर सदैव रहने वाला मान लेना अज्ञान है, नूरमहल के एक बाबा को मरे एक साल से भी उपर हो गया है पर यह सोचना कि वह समाधी में है अज्ञान है। इसके विपरीत जो चीज जैसी है उस को वैसे ही जानना ज्ञान है। विज्ञान ने सिद्ध कर दिया है कि पृथ्वी गाोल है पर उसके बावजूद भी उसको चपटी मानना कयोंकि बाईवल में लिखा है अज्ञान है।

रजि. नं. : 4262/12 ।। ओ३म् ।। फोन : 94170-44481, 95010-84671

महर्षि दयानन्द बाल आश्रम

मुख्य कार्यालय -1781, फेज़ 3बी-2, सैक्टर-60, मोहाली, चंडीगढ़ - 160059
शाखा कार्यालय - 681, सैक्टर-4, नज़दीक गुरुद्वारा, मुंडीखरड़-मोहाली
आर्य समाज मंदिर, चंडीगढ़ व पंचकुला
E-mail : dayanandashram@yahoo.com, Website : www.dayanandbalashram.org

श्री बलवीर सिंह ने बाल आश्रम के बच्चों को कुरता पजामा व चप्पल दिये। यहां पर बच्चो और Staff के साथ

धार्मिक माता/पिता 2100 प्रति माह
धार्मिक सखा 500 प्रति माह
धार्मिक बहन/भाई 1500 प्रति माह
धार्मिक सहयोगी 100 प्रति माह
धार्मिक बन्धु 1000 प्रति माह
धार्मिक साथी 50 प्रति माह

A/c No. : 32434144307
Bank : SBI
IFSC Code : SBIN0001828

आप आर्थिक सहयोग देकर भी पुण्य के भागी बन सकते है :-

नरेन्द्र गुप्ता लेखराम (+91 7589219746)

स्वर्गीय
श्रीमती शारदा देवी
सूद

निमार्ण के 63 वर्ष

गैस ऐसीडिटी
शिमला का मशहूर
कामधेनु जल

(एक अनोखी आर्युवैदिक दवाई
मुख्य स्थान जहां उपलब्ध है)

स्वर्गीय
डॉ0 भूपेन्दर नाथ गुप्त
सूद

Chandigarh-2691964, 5076448, 2615360, 2700987, 2708497, Manimajra-2739682, Panchkula 2580109, 2579090, 2571016, Mohali-2273123, 2212409, 2232276, Zirakpur-295108, Shimla- 2655644, Delhi-23344469, 27325636, 47041705, 27381489,Yamunanagar-232063, Dehradoon-2712022, Bhopal-2550773, 9425302317, Jaipur-2318554, Raipur-9425507000, Lucknow-2683019, Ranchi-09431941764, Guwhati-09864785009, 2634006, Meerut- 8923638010, Bikaner-2521148, Batala-240903, Gwaliyar-2332483, Surat-2490151, Jammu-2542205m, Gajiabad-2834062, Noida-2527981, Nagpur-9422108322, Ludhiana-2741889, 9915312526, Amritsar-2558543, Jallandhar-2227877, Ambala Cantt-4002178, Panipat-4006838, Agra-0941239552, Patiala-2360925, Bhatinda-2255790

Medicine is available in other places also, Please contact us to know the name of the shop/dealer.

शारदा फारमासियुटिकलज मकान 231ए सैक्टर 45–ए चण्डीगढ़ 160047

0172-2662870, 92179 70381, E-mail : bhartsood@yahoo.co.in

जिन महानुभावो ने बाल आश्रम के लिए दान दिया

Rita Chawla

Avinash Chander

Raj Kumar Malhotra

Manohar Lal

Sunil Pahwa

Mr. & Mrs. Chouhan

Pulkit

RNI NO. CHABIL/2012/47744 POSTAL REGN. NO. G/CHD/0154/2013-2015

मजबूती में बे–मिसाल

घर का निर्माण डीप्लास्ट के साथ

40 years in service

DIPLAST

PLASTICS LIMITED

AN ISO 9001 COMPANY

C-36, Industrial Phase 2, S.A.S. Nagar, Mohali (Pb.) India
Phone : +91-172-2272942, 5098187, Fax : +91-172-2225224
E-mail : diplastplastic@yahoo.com, Web : www.diplast.com

QUALITY IS OUR STRENGTH

विज्ञापन / Advertisement

यह पत्रिका शिक्षित वर्ग के पास जाती है आप उपयुक्त वर–वधु की तलाश, प्रियजनों को श्रद्धा सुमन, अपने व्यापार को आगे ले जाने के लिये शुभ–अशुभ सूचना विज्ञापन द्वारा दे सकते है।

Half Page Rs. 250/- Full Page Rs. 500/- 75 words Rs. 100

Contact : Bhartendu Sood 231, Sector 45-A, Chandigarh
9217970381 and 0172-2662870